15 अक्टूबर 2016 को वनस्थली विश्वविद्यालय, वनस्थली के वार्षिक समारोह में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

1. आज वनस्थली विद्यापीठ में आयोजित वार्षिक समारोह में आप सबके बीच आकर मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। जब विराट संकल्प की उर्वर भूमि से प्रेरणा की एक छोटी–सी कोंपल निकलती है तब वनस्थली जैसी संस्थाओं का प्रादुर्भाव होता है। यह वनस्थली का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण शिक्षा जगत का सौभाग्य है कि इस संस्था को स्व. पं. हीरालाल शास्त्री उनकी पत्नी स्व. श्रीमती रतन शास्त्री जैसा कुशल एवं देव दुर्लभ कर्मठ नेतृत्व मिला। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि जिस प्रकार गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर का शान्ति निकेतन एक अभिनव प्रयोग था उसी प्रकार वनस्थली भी इस श्रेणी में एक अभिनव प्रयोग है जो आज एक विशिष्ट विश्वविद्यालय के रूप में हमारे समाज में एक अनुपम स्थान बना चुका है।

2. आज यहां आप सबके बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता भी है और उस अविछिन्न परम्परा के साथ जुड़ने का गौरव भी मिल रहा है। बड़े लक्ष्यों के पीछे बड़े व्यक्तित्व होते है। वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक स्व. पं. हीरालाल शास्त्री ने जब सन 1929 में तत्कालीन जयपुर राज्य सरकार में गृह तथा विदेश विभाग के सचिव के सम्मानपूर्ण पद को त्यागकर जयपुर से दूर स्थित गांव वनस्थली को पत्नी स्व. श्रीमती रतन शास्त्री के साथ अपने भावी कार्यक्षेत्र के रुप में चुना तो उनके मन में मूल रूप से ग्राम पुनर्निर्माण का कार्यक्रम प्रारंभ करने और साथ ही रचनात्मक कार्यक्रम के माध्यम से सार्वजनिक कार्यकर्ता तैयार करने की इच्छा, विचार और योजना मन में घुमड़ रहे होंगे और यह कार्य योजना भी उनके मन में रही होगी।

3. पर कहते है न विधि का अपना विधान होता है, कभी–कभी किसी भीषण दु:ख, कष्ट और संताप से उपजे भाव बड़ी संस्थाओं की नींव का पत्थर बनते है। यहाँ कार्य करते हुए

स्व0 पं. हीरालाल शास्त्री एवं श्रीमती रतन शास्त्री की प्रतिभावान 12 वर्षीय पुत्री शांताबाई का अचानक 25 अप्रैल, 1935 को केवल एक दिन की अस्वस्थता के पश्चात निधन हो गया। यह आघात मर्मान्तक था, भीषण था, शांताबाई की इस अकस्मात् अकाल मृत्यु के साथ उस प्रतिभाशाली बालिका के साथ माता–पिता के देखे गए सपने भी समाप्त होने लगे। इस अभाव और रिक्तता की भावनात्मक पूर्ति के लिए उन्होंने अपने परिचितों, मित्रों की 5-6 बच्चियों को बुलाकर उनके शिक्षण का कार्य आरंभ कर दिया और इसके लिए 6 अक्टूबर, 1935 को श्री शांताबाई कुटीर की स्थापना की, वह छोटी सी शांताबाई कुटीर आज वनस्थली विद्यापीठ के रुप में विकसित होकर हमारे सामने है। आज एक शांताबाई के जाने के बाद हमारे पास अनेकानेक प्रतिभाशाली शांताबाई जैसी सहस्रों बालिकाओं और युवतियों की श्रृंखला है जो राष्ट्र–निर्माण में अपना महती योगदान दे रही हैं। सफलता इसी को कहते हैं। मानवीय प्रयास कैसे संस्थागत हो जाते है यह इसका एक जीता–जागता उदाहरण है।

4. पंडित हीरा लाल शास्त्री न केवल एक प्रख्यात समाज सुधारक थे बल्कि वे राजस्थान राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री थे। साथ ही, उन्होंने संविधान सभा के संस्थापक सदस्य के रूप में संविधान निर्माण में भी अपनी भूमिका निभाई। वे दूसरी लोक सभा के सदस्य भी थे। एक महान राष्ट्रवादी और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में पंडित हीरालाल शास्त्री एवं श्रीमती रतन शास्त्री ने उस समय महिलाओं की शिक्षा के महत्व को महसूस किया, जब भारतीय समाज महिलाओं के प्रति अनेक कुरीतियों की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उनके उत्तराधिकारियों ने उनके मिशन को समुचित और दृढ़ प्रयासों से प्रशंसनीय रूप से आगे बढ़ाया है।

5. इसका नाम वनस्थली विद्यापीठ 1943 में रखा गया। यही वह वर्ष था जब यहाँ स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम प्रथम बार आरंभ हुए। वनस्थली विद्यापीठ की प्रथम छात्रा प्रो. सुशीला व्यास को निदेशक बनाया गया। यू.जी.सी. ने 1983 में विद्यापीठ के पाठ्यक्रमों, सहगामी क्रियाओं तथा छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करने वाली इस संस्था को **''डीम्ड यूनिवर्सिटी''** का दर्जा दिया। इस विद्यापीठ की स्थापना हुए 81 वर्ष हो गए हैं तथा इसे

National Assessment Accredition Council द्वारा सबसे उत्तम 'ए' ग्रेड दिया गया है। वनस्थली का वातावरण स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्तित्व निर्माण का वातावरण है। जो छात्रा दो–चार वर्ष वनस्थली में पढ़ लेती हैं, उसके व्यक्तित्व में वनस्थली की झलक, आत्मविश्वास, संकल्प एवं साहस देखा जा सकता है।

6. प्रिय मित्रो! शिक्षा सामाजिक और नैतिक मूल्यों को विकसित करने और नागरिकों को संवेदनशील और जिम्मेदार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारे बहुलवादी और विविधतापूर्ण समाज में हम मूल्य आधारित और समावेशी शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए मूल्यों का समावेश कर सकते हैं। शिक्षा युवाओं को भविष्य में उनकी भूमिका और जिम्मेदारियों के लिए तैयार करती है। आवश्यक मूल्यों और भारतीय संस्कृति तथा भारतीय जीवनशैली के मूलभूत मूल्यों और आदर्शों का संरक्षण करने और उन्हें छात्रों के मन–मस्तिष्क में विकसित करने के वनस्थली विद्यापीठ के प्रयास प्रशंसनीय हैं।

7. शिक्षा का मूल लक्ष्य व्यक्तित्व–निर्माण है। शिक्षा मात्र ज्ञान एवं Innovation की खोज होती है जिनसे प्राप्त योग्यता एक सामाजिक थाती है, जिसका उपयोग समर्पण भाव से जनहित में किया जाना चाहिए। जो जीवन के प्रति आध्यात्मिक दृष्टि रखते हैं, उनके लिए **''शिक्षा मुक्ति का साधन है– सा विद्या या विमुक्तये''** जो कि इस विद्यापीठ का सूत्रवाक्य है।

8. चूंकि, शिक्षा ही व्यक्ति के रूप में और राष्ट्र के रूप में हमारे व्यक्तित्व निर्माण का आधार है इसलिए इसकी विषयवस्तु और गुणवत्ता बहुत महत्वपूर्ण हैं। मैं समझती हूं कि शिक्षा का अर्थ केवल तथ्यों और आंकड़ों की जानकारी प्राप्त करना या परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होना ही नहीं है, विद्यार्थियों को भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने हेतु उनका बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक विकास भी आवश्यक है और इस संबंध में शिक्षा संस्थान और अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें विद्यार्थियों को सोचने, प्रश्न पूछने और

सृजनात्मक वातावरण में अन्वेषण (investigation) की भावना विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। **One great scientist has said that "I have no special skills. I am only passionately curious."**

9. सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु **Innovation** है। **Innovation is change that unlocks new values. In fact, it distinguishes between a leader and follower. Innovative ideas** शिक्षा पद्धति की दशा और दिशा बदल सकते हैं। प्रख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटीन ने कहा थाः–

"Imagination is more important than knowledge. Knowledge is limited. Imagination encircles the world".

10. मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ–साथ उच्च आध्यात्मिक मूल्यों की भी शिक्षा प्रदान की जा रही है। एक ओर खादी के वस्त्र पहने छात्राओं, कर्मचारीगण और शिक्षकों से युक्त परिसर में भारतीय परिवेश वहीं दूसरी ओर घुड़सवारी तथा वैमानिकी कौशल के प्रदर्शन के साथ–साथ सुसज्जित प्रयोगशालाओं में तथा कम्प्यूटरों पर कार्य करती हुई छात्राओं का संगम इसे एक अलग रूप प्रदान करता है। मैं पंचमुखी शिक्षा अर्थात् शिक्षा के पांच पहलू यथा शारीरिक, व्यावहारिक, कलात्मक, नैतिक और बौद्धिक जो कि वस्तुतः बहुत आकर्षक और प्रभावशाली है, की संकल्पना, जो राष्ट्र के प्रति सेवा के इसके मिशन को पूरा करने तथा भारतीय संस्कृति के विकास के लिए इस संस्थान ने विकसित की है, से भी प्रभावित हूं। यह संस्थान जो कि छात्राओं के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास करता है, के छात्राओं को भी इस संस्थान में शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्वयं को सौभाग्यशाली समझना चाहिए। इस विद्यापीठ में नर्सरी से लेकर स्नातकोत्तर तक की शिक्षाएं दी जाती हैं। यहां इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है जिसमें पश्चिम और पूर्व दोनों का मिश्रण है। यहां 14000 से अधिक विभिन्न भाषा–भाषी छात्राएं मिलजुलकर शिक्षा ग्रहण करती हैं। यह भारत की बहुसांस्कृतिक, बहुभाषिक एवं रचनात्मक

खूबसूरती का ही प्रतिबिम्ब है। सभी एक दूसरे की परंपराओं एवं रहन–सहन के बारे में जान पाते हैं, उनके निकट आ पाते हैं। वनस्थली की पंचमुखी शिक्षा और उसे सम्पन्न करने के लिए जो विशेष प्रवृत्तियाँ आयोजित की जाती हैं। यह सर्वांगीण शिक्षा देने की दृष्टि से एक विशिष्ट शिक्षा योजना है। यहां घुड़सवारी जैसे खेल जिसमें सामान्य तौर पर महिलाएं हिस्सा नहीं लेती हैं, के प्रशिक्षण की व्यवस्था है, जो यहां का एक विशिष्ट और सराहनीय पक्ष है। यहां पर उन्हें flying भी सिखाया जाता है जो कि उन्हें साहसी बनाता है। देश की पहली महिला फाइटर पायलट सुश्री अवनी चतुर्वेदी ने भी यहीं से शिक्षा ग्रहण की थी।

11. बड़ी संख्या में युवा उत्साह से युक्त ओजस्वी छात्राओं को देखकर बहुत हर्ष पैदा होता है। इससे पहले दोपहर में मुझे वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं की बहुआयामी उपलब्धियों को देखने का अवसर मिला। मैं यहां अपने सामने बैठी छात्राओं में भावी पी.वी. सिंधु, कल्पना चावला और किरन मजूमदार शॉ को देख सकती हूं।

12. मेरा मानना है कि पुरुष और स्त्री दोनों एक दूसरे के पूरक हैं तथा प्राचीन काल में हमारे देश में दोनों को समान शिक्षाएं दी जाती थीं। गार्गी, मैत्रेयी, अनुसुइया, मदालसा, भारती इत्यादि ऐसे नाम हैं जिनकी विद्वता पूरे संसार में प्रसिद्ध है। यह उन्हें दी गई समान शिक्षा का ही परिणाम है। आज सम्पूर्ण विश्व में महिला और पुरुषों को एक समान अधिकार मिल रहे हैं। पंडित हीरालाल शास्त्री उस संविधान सभा के सदस्य थे, जिसने भारत में आजादी के साथ ही संविधान में महिलाओं और पुरुषों को बराबरी का हक दिया, जिसके लिए हमारे संविधान के निर्माताओं एवं उनकी दूरदृष्टि को सदैव ही स्मरण किया जाएगा। अब संसद में भी महिलाओं ने अपनी प्रखर आवाज़ उठाई हैं। समय–समय पर महिलाओं ने भारत का नेतृत्व भी किया है। महिलाओं ने हर कदम पर अपनी योग्यता को प्रमाणित किया है।

13. समाज में महिलाओं को आगे लाने एवं उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में सरकार भी अपनी जिम्मेदारियां निभा रही है। महिलाएं समाज की धूरी हैं एवं उनमें शक्ति एवं योग्यता की

कोई कमी नहीं है। सशक्त महिलाएं समाज के लिए प्रेरणास्रोत का काम करती हैं। हाल ही में वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ की पेरिस सम्मेलन में 17 **SDG** (सतत् विकास लक्ष्य) और 169 एसोसिएटेड टारगेट निर्धारित किए गए हैं जिन्हें वर्ष 2030 तक पूरा किया जाना सुनिश्चित करना है। इसमें महिला एवं बालिका सशक्तीकरण भी सम्मिलित है। **The *2030 Agenda for Sustainable Development,* the 17 SDGs are aspiration Goals with 169 targets adopted by the United Nations. One of the SDGs (Goal 4) seeks to ensure inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all. India is also a party to this and all stake holders must work together to achieve this goal by 2030.**

14. वनस्थली विद्यापीठ का लक्ष्य पूर्व एंव पश्चिम की आध्यात्मिक विरासत एंव वैज्ञानिक उपलब्धि के समन्वय को व्यक्त करने वाली शिक्षा व्यवस्था से छात्राओं के सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करना है। इस विद्यापीठ की कई छात्राओं ने देश के लिए कार्य किया है एवं कई महत्वपूर्ण पद को सुशोभित किया है जिनमें पूर्व लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार एवं गुजरात की पूर्व राज्यपाल श्रीमती कमला बेनीवाल प्रमुख हैं।

15. स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था और मैं उद्धृत करती हूंः–

"Education is not the amount of information that we put into your brain and runs riot there, undigested, all your life. We must have life building, man making, character making assimilation of ideas. If you have assimilated five ideas and made them your life and character, you have more education than any man who has got by heart a whole library."

16. इस वार्षिक समारोह के अवसर पर आप सबके बीच आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। अब आप कॉलेज के जीवन से इतर अपने व्यावसायिक जीवन (professional life) में कदम रखने जा रहे हैं, जहां आपके समक्ष कई चुनौतियां और अवसर आएंगे। उनका सदुपयोग कर अपने जीवन को सफलता के शिखर पर ले जाने की जिम्मेदारी आपकी है। आपका परिश्रम, लगन एवं दृढ़ संकल्प ही आपकी सबसे बड़ी पूंजी साबित होगी। मैं आप सभी के समृद्ध एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए इस श्लोक से अपनी बात समाप्त करती हूं:–

''नास्ति विद्यासमो बन्धुः नास्ति विद्यासमः सहृत्।

नास्ति विद्यासमं वित्तम् नास्ति विद्यासमं सुखम्।।

(There is no relative equivalent to knowledge, there is no friend equivalent to knowledge.

There is no wealth equivalent to knowledge, there is no happiness equivalent to knowledge.)

धन्यवाद।

———